SARA AKASH

(THE WHOLE SKY)

राजेन्द्र यादव के उपन्यास 'सारा आकाश' ०१

(प्रथम भाग) पर आधारित फ़िल्म ।

पटकथा और निर्देशन: बासु चटर्जी ।

बम्बई, १९६९

पात्र ०२

समर:	कालेज में पढ़ाई करता है । कहानी इसके विवाह से शुरू होती है ।
अम्मा:	समर की मां
पिताजी:	समर के पिताजी
बड़े भाई:	समर के बड़े भाई
भाभी:	समर के बड़े भाई की पत्नी
मुन्नी:	समर की बहन
अमर:	समर का छोटा भाई
प्रभा:	समर की बहू
दिवाकर:	समर का दोस्त । वह समर के साथ कालेज में पढ़ता है ।
किरन:	दिवाकर की पत्नी

यार - दोस्त, परिवार के लोग, नौकर - चाकर,

कालेज के शिक्षक, विद्यार्थी

00 फ़िल्म के आरंभ में कैमरा आगरे की गलियों से गुज़रकर 03
एक मामूली मकान के सामने ठहरता है । शाम का समय
है । एक युवक घोड़े पर सवार है । उसके आगे बीन और
नगाड़ा बजानेवाला बैंड चल रहा है । धूमधाम शादी की
है ।

दूल्हा और उसके परिवार के लोग मकान के अन्दर प्रवेश 04
करते हैं । आंगन के एक हिस्से से दुलहन और उसके
परिवार के लोग आगे बढ़ते हैं । दुलहन नवयुवक को माला
पहनाती है; फिर दोनों एक साथ मंच में बैठ जाते हैं ।
पंडितजी मंत्र पढ़ना शुरू करते हैं ।

युवक का नाम समर है । उसके चेहरे पर घबराहट नज़र 05
आती है । शायद उसे शादी नापसन्द है । शायद वह
डर रहा है कि उसने शादी का अर्थ न समझा है, न
समझ पाएगा ।

पंडितजी मंत्र पढ़ रहे हैं और समर चिन्ता कर रहा है: 06
मेरे साथी इस शादी के बारे में क्या कहते थे ....

00 प्लेश बैक । कालेज के बाहर लड़के नज़र आते हैं । १

पहला दोस्त: मुबारक हो समर, सुना शादी कर रहे हो । अबे इतनी २
जल्दी क्या पड़ी थी? पढ़ाई तो ख़त्म कर लेता ।

दूसरा दोस्त: अरे चले कहां? सुनो तो सही । गुरुजी तो कह रहे थे, ३
समर बड़ा होकर कुछ कर दिखायेगा । 00 हंसते हुए 00
इसने तो अभी से कर दिखाया ।

तीसरा दोस्त: अरे क्या डींग मारत था क्लास में । " मैं यह करूंगा ४
वह करूंगा । मेरा आदर्श नेताजी हैं ।"

पहला दोस्त: अरे सब ऐसे ही कहते हैं । अपने दिवाकर को ही देखो न । ५
क्या था, और अब शादी के बाद, सारे आदर्श ठंडे हो
गये । छुट्टी हुई और सीधे घर ।

तीसरा दोस्त: इन का भी यही हाल होनेवाला है । ६

00 शादी का मंच । पंडितजी मंत्र पढ़ रहे हैं । प्लेश बैक । ७
समर का घर । समर की मां परात में आटा सान रही है ।

अम्मा: समर बेटा, अब इस घर में बहू आनी ही चाहिए । बड़े की ८
बरात गये आठ साल हो गये । अब मेरे हाथ - पैर भी काम
नहीं करते । तू घर में छोटी बहू ले आ तो मुझे फ़ुर्सत मिले ।

समर: नहीं अम्मा, नहीं । मुझे अभी शादी - वादी नहीं करनी । ९
अभी तो मेरी पढ़ाई भी ख़त्म नहीं हुई है । और फिर
शादी के बाद कोई ख़ाक कुछ कर पायेगा ? मुझे अपना
फ़्यूचर देखना है ।

00 पिताजी के कमरे में । पिताजी हुक्का पी रहे थे । १०

पिताजी: फ़्यूचर देखना है ? साहबज़ादे अंग्रेज़ी बोल रहे हैं । तुम्हारा ११
ही तो फ़्यूचर है ? इस घर का तो कोई फ़्यूचर है ही नहीं ?
मालूम है, मुन्नी की शादी का क़र्ज़ा अभी तक ढो रहा हूँ?
कहां से आयेगा यह रुपया? कभी सोचा है? फ़्यूचर
देखना है!

00 शादी का मंडप । दूल्हा - दुलहन बैठे हैं । रसोईघर में १२
भाभी के साथ । भाभी रोटी बेल रही हैं ।

समर: चाहे कोई ज़िन्दगी में कुछ कर पाये या नहीं, बस जोत दो १३
गृहस्थी में । बांध दो उसके पांव में ज़ंजीर ।

भाभी: लालाजी, शादी - ब्याह तो हर एक को करना ही है । १४

समर: हर एक को मरना भी है । तो अभी से मर जायें ? १५

भाभी: कैसी बातें करते हो लालाजी । पढ़ी - लिखी लड़की है, १६
लालाजी, मैट्रिक पास । हमारे यहां सात पीढ़ी कोई
पढ़ी - लिखी बहू आई ही नहीं । 00 कुछ सोचकर 00
प्यार की बातें अंग्रेज़ी में ही कर लिया करना ।

00 शादी का मंडप । दूल्हा - दुलहन सात फेरे लगा रहे हैं । १७
मैदान में पेड़ के नीचे शिक्षक बालकों को पढ़ा रहे हैं ।

शिक्षक: और इसीलिए देश को साहसी और कर्मठ युवकों की ज़रूरत १८
है । आज के युवक ही कल के कर्णधार होंगे । याद रखो,
तुम में से हर एक को कुछ बनना है । आज भी तुम में से हज़ारों
भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी, और भगवान राम हैं ।

00 अब बालक समर भाषण दे रहा है । १९

समर: हमारी ही शक्तियां आज भगत सिंह, विवेकानन्द और २०
नेताजी को पैदा कर सकती हैं । लेकिन इस कुछ बनने के लिए
हमें शपथ लेनी होगी । हमारे सामने बहुत - सी बाधाएं
आएंगी । इन्हीं बाधाओं और मुसीबतों को कुचलकर हमें
आगे बढ़ना है । 00 तालियों की आवाज़ 00

00 शादी का मंडप । समर की कल्पना में: समर और उसकी २१
बहू शादी के कपड़ों में कालेज लेक्चर हाल में बैठे हैं ।
आस - पास बैठे विद्यार्थी उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं ।

विद्यार्थी: श्री और श्रीमती समर, क्या जोड़ी बनाई है ! २२
हमारे नेता, पथ प्रदर्शक !
अभी से पालतू बन गये!

00 समर की कल्पना में: समर इस मज़ाक़ से दूर भागना २३
चाहता है, लेकिन भाग नहीं पाता । शादी के गीत

बजाते बैंड उसके पीछे - पीछे चलता है ।

समर की आवाज़: भागो समर, भाग जाओ । इस जंजाल से दूर भागो । २४
यह माया - जाल है । तुम्हें तो कुछ बनना है, समर,
कुछ बनना है । कुछ करके दिखाना है । शादी करके कोई
कुछ नहीं कर सकता, समर, कोई कुछ नहीं कर सकता ।

00 समर और प्रभा बारात की महिलाओं के बीच कमरे में २५
बैठे हैं । उनके सामने पानी और दूध से भरी एक थाली
है । भाभी समर के हाथ से अंगूठी निकालकर थाली में
डालती है ।

भाभी: लो, यह हो गया । लाओ, लालाजी, अंगूठी । देखें २६
अब कौन पहले निकालता है अंगूठी ।

00 समर और प्रभा दुधिये पानी में हाथ डालते हैं । अंगूठी २७
प्रभा के हाथ आती है ।

भाभी: हार गये, लालाजी । अब बीवी के हाथों में हो ! २८

00 फ़्लैश बैक । समर और दिवाकर सड़क पर चल रहे हैं । २९

समर: इन बातों में क्या रखा है, दिवाकर? मेरा भविष्य ३०
है मेरे हाथों में । बस ज़रा - सा अपने आप को साध लूं,
फिर चाहे तलवार की धार पर चढ़ा दो मुझे ।

00 विवाह की रात । प्रभा समर के कमरे के एक कोने में ३१
खड़ी है । कमरा पहली मंज़िल पर है । खिड़की के बाहर
शोरगुल सुनाई पड़ता है ।

नीचे से आवाज़ें: सांवल की बहू ने मिट्टी का तेल छिड़क के ख़ुदकुशी कर ली है । ३२
सांवल की बहू ने मिट्टी का तेल छिड़क के ख़ुदकुशी कर ली है ।

00 समर को भाभी, मुन्नी और दूसरी महिलाएं उसके कमरे की ३३
ओर ले जाती हैं ।

भाभी: जल्दी मत करना, लालाजी । ३४

एक औरत: मुबह सब पूछेंगे । ३५

भाभी: तुम तो दुलहन की तरह शर्माते हो, लालाजी । ३५'
00 कमरे के भीतर उसे धकेलते हुए 00

एक औरत: मुबह सब पूछेंगे । ३५"

00 औरतों की हंसी । अब कमरे में केवल समर और प्रभा हैं । ३६
प्रभा खिड़की के पास खड़ी है । समर को साहस की ज़रूरत
है । उसे प्रार्थना के कुछ शब्द याद आते हैं:
वह शक्ति हमें दो दयानिधे ३७
कर्तव्य मार्ग पर डट जावें ।
समर को किसी फ़िल्म का एक सीन याद आता है । ३८
शयनगृह में हीरो सुहाग रात को उसी तरह खड़ा है । कमरे
के एक कोने से हिरोइन हीरो की ओर आती है । वह
हीरो का पैर छूने लगती है लेकिन हीरो उसे अपनी बाहों में

समेट लेता है । लेकिन प्रभा तो उसी तरह एक कोने में खड़ी है । समर याद करता है कि वह और दिवाकर पेड़ के नीचे बैठे हैं । दिवाकर की हाल में ही शादी हुई है ।

दिवाकर: यार, इस मामले में मैं बहुत भाग्यवान हूं । जब से किरन आई है, यहां तो बस चैन की बंशी है । और गुरु, ऊपर से पढ़ी - लिखी बीवी मिल जाये, बस । सर कढ़ाई में । ३९

00 प्रभा अब भी खिड़की के पास खड़ी है । समर सोचने लगता है: ४०

समर, अपने आप से: मैं यहां क्यों आया ? न बोलना, न स्वागत । क्या यह मेरा अपमान नहीं है ? खड़ी हैं सिर झुकाकर । यही शिक्षा है इनकी? मैट्रिक- पास हैं । समझती हैं दूसरे लड़कों की तरह मैं इन्हें मनाऊंगा? खुशामद करूंगा ? ४१

00 न प्रभा हिलती है, न समर कुछ कर पाता है । उसकी घबराहट बढ़ती जाती है । एकाएक वह कमरे से बाहर निकलकर छत पर चला जाता है । उसकी वधू खुले दरवाज़े को देखती रहती है । ४२

00 समर के घर में अगला दिन । ४२'

भाभी: बीबीजी, लालाजी तो छत पर सो रहे हैं । ४३

घर के लोग: क्या हो गया ? ४४
लेकिन हुआ क्या ? अलग - अलग सोये ।
लगता है रात दोनों में झगड़ा हो गया है ।
लेकिन बात क्या हुई है ?
अरे हो क्या गया है ?
बात क्या हुई है ?

00 बैठक में । पिताजी हुक्का गुड़गुड़ाते अखबार पढ़ रहे हैं । समर सिर झुकाये कुर्सी के पास खड़ा है, कुर्सी की बेंत मसल रहा है । ४५

पिताजी: क्या बात है ? बहू तुझे पसंद नहीं आई? सुनते हैं तू उससे बोला तक नहीं । 00 समर चुप 00 कुछ बोलेगा या नहीं ? कोई घर आता है तो ऐसा व्यवहार करते हैं ? क्या कहेगी वह घर जाकर ? ठीक है, तुम्हारी शादी करने की इच्छा नहीं थी । लेकिन अब तो शादीशुदा हो गए । यह लड़कपन कब तक चलेगा ? जो हो जाता है उसे निभाना पड़ता है। यह भी तो सोचो, वह बेचारी पराई लड़की किसके बूते पर आई है ? बड़े आये आदर्शवादी! 00 गुस्से में 00 अब खड़े क्या हो? जाओ । ४६

00 भाभी छत पर धुलाई पसार रही हैं । ४७

समर: इस में मेरी क्या ग़लती है ? मैंने कहा था, मत करो मेरी शादी । यह मेरे बनने का समय है । शादी के बाद कोई ४८

ख़ाक बनेगा ।

भाभी: तुम्हारी तो शादी तो हुई । लगता है दुनिया-भर का ४९
बोझ तुम्हारे ऊपर आ गया ।

समर: ऐसी रुकावटें तो आती रहती हैं । मैं कोई परवाह ५०
थोड़े ही करता हूं ।

भाभी: अब बनो मत, लालाजी । दीखता तो सभी को है । ५१
सुबह से मुंह लटकाये घूम रहे हो । पहली रात न बनी तो
क्या हुआ? अभी तो और भी रातें हैं ।

समर: भाभी, घमंड तो यहां सगे-से सगे का नहीं सह सकते । ५२
फिर चाहे कोई कितना ही मैट्रिक-पास हो या ख़ूबसूरत
हो ।

भाभी: ख़ैर । लालाजी, यह बात तो हमें भी खटकी । प्रभा में ५३
अपनी पढ़ाई-लिखाई और ख़ूबसूरती का गुमान तो ज़रूर
है । मुझसे पूछो तो कोई ऐसी परीज़ादी भी नहीं है ।
यों तो अपनी उम्र पर कौन ख़ूबसूरत नहीं होता? हम
नहीं थे?

समर: वाक़ई ख़ूबसूरत होती तो न जाने दिमाग़ कहां होता । ५४

भाभी: हमें तो बात करने लायक़ भी नहीं समझती । बस किताबें ५५

ले आई है घर से । और तो कुछ लाई नहीं ।

समर: कहता था मुझे इस कुएं में मत डालो । पर तब तो तुम्हें ५६
भी ज़िद चढ़ी थी, भाभी । जैसे भी हो, इस के गले
में भी फांसी का फंदा क्यों न पड़े?

भाभी: ज़रा धीरे बोलो, लालाजी । नहीं तो कोई समझेगा ५७
मैं ही तुम्हें उल्टा-सीधा सिखा रही हूं ।

समर: इस में सिखाने की क्या बात है? क्या मैं नहीं ५८
समझता?

भाभी: ख़ैर, आओ खाना खा लो । फ़ोटो खींचनेवाला आता ५९
ही होगा ।

समर: मुझे भूख नहीं है । तुम लोग खाओ । ६०

भाभी: अब चलो भी । तुम भी ज़रा ज़रा-सी बातों में सर ६१
खपाया करते हो । सब ठीक हो जायेगा । मैं समझा
दूंगी उसे । चलो ।

०० मुन्नी घर के दरवाज़े पर खड़ी है । अमर उसकी ओर ६२
सिनेमा टिकट लिए आ रहा है ।

मुन्नी: ले आया? ६३

अमर: हां, मुन्नी जीजी । ६४

०० मुन्नी दौड़कर समर और प्रभा के कमरे में जाती है । ६५

मुन्नी: भाभी जल्दी तैयार हो लो । फ़ोटो के बाद सिनेमा जाना है । ६६

०० अब वह समर के पास जाती है । समर और भाभी बातें कर रहे थे । ६७

मुन्नी: भैया, जल्दी खाना - वाना खा लो । तीन बजे के शो में सिनेमा जाना है । ६८

भाभी: पान लाई? ६९

मुन्नी: हां । ०० भाभी को पान देती है ०० ७०

भाभी: कौन - सा सिनेमा है ? ७१

समर: सिनेमा - विनेमा तुम लोग जाओ । ७२

भाभी: अब बहुत हो गया । चलो लालाजी । बरसों हो गये ७३

हमने भी कोई सनीमा नहीं देखा ।

मुन्नी: लेकिन भाभी, वो तीन बजे गीतों में पूनम मौसी आ रही है न? हम कैसे जा पाएंगे? भैया और छोटी भाभी को ही जाने दो । ७३'

भाभी: हां हां । लालाजी, तुम दोनों देख आओ । शायद कोई बात बन जाए । ७४

समर: मैं नहीं जाऊंगा । ७५

मुन्नी: अब तो टिकटें भी आ गई हैं, भैया । ७६

समर: फिर अमर को भेज दो । ७७

अमर: हां, मुन्नी जीजी । ७८

मुन्नी: तू चुप रह । भैया ... ७९

भाभी: अरे लालाजी, मान भी जाते हैं । प्रभा क्या काट खायेगी ? ८०

मुन्नी: नहीं, नहीं भैया, तुम्हें और भाभी को जाना ही पड़ेगा। ८१

पिताजी की आवाज़: अरे भई, सब तैयार हैं ? ८२

०० भाभी और अम्मा प्रभा को कमरे से बुलाने जाती हैं। ८३
फ़ोटोग्राफ़र छत पर कैमरे को ठीक कर रहा है।

भाभी: देखो, अम्माजी, किवाड़ बन्द करके बैठी है। ज़रूर ८४
परदा लेके खिड़की पर बैठी होगी।

अम्मा: अब बुला ले न। मैं चूल्हे पर खाना चढ़ाके आई। ८५

०० अम्मा चली जाती हैं। भाभी दरवाज़े को थपथपाती है। ८६

भाभी: दिन में भी कमरा बन्द? लालाजी तो ऊपर हैं। चलो ८७
आओ। फ़ोटोग्राफ़र आ गया है।

०० सारा परिवार छत पर है। ८८

फ़ोटोग्राफ़र: येस, रेडी प्लीज़। ०० कैमरे की क्लिक ०० ८९
थैंक यू।

०० फ़ोटो खिंचाने के बाद सब उठते हैं। ९०

अम्मा: बस, अब समर, तुम और बहू फ़ोटो खिंचवाओ। ९१

मुन्नी: पहले दोनों बड़े भैया और भाभी की खींचो। ९२

अम्मा: हां। ९३

फ़ोटोग्राफ़र: येस, रेडी प्लीज़। ९४

मुन्नी: अब समर भैया और छोटी भाभी की फ़ोटो खींचेगा। ९५

अम्मा: चलो। अब जल्दी करो। खाना ठंडा हो जाएगा। ९६

बड़े भाई: हां, मां। ९७

०० समर प्रभा से हटकर बैठता है। ९८

फ़ोटोग्राफ़र: हां, आप ज़रा आस-पास। ऊपर देखिए ज़रा। ९९

पिताजी: ००समर से ०० अबे, ठीक से बैठता क्यों नहीं ? हंस ज़रा। १००

०० समर का चेहरा ग़ुस्से से लाल है। फ़ोटोग्राफ़र तस्वीर खींचता १०१
है। सब लोग नीचे आ जाते हैं।

पिताजी: देखो तो मूअर को। तस्वीर खिंचवाएगा, वह भी १०२
खिसियाकर। नालायक़!

00 समर और प्रभा सिनेमाघर की ओर जाते हैं । १०३
सिनेमा के सामने समर को कालेज का कोई दोस्त नज़र आता है ।

दोस्त: अरे, समर । सुना है शादी-वादी कर ली है, यार । १०४
बताया तक नहीं । पिक्चर जा रहे हो?

समर: नहीं वो... १०५

दोस्त: यह कौन है? तुम्हारी श्रीमतीजी? १०६

समर: 00घबराया हुआ 00 नहीं, नहीं । नहीं । १०७

दोस्त: तो बहन है ? १०८

समर: हां, हां, हां । अच्छा, मैं चलता हूं । १०९

00 इसके बाद समर की हिम्मत नहीं होती कि सिनेमाघर में ११०
प्रवेश करे । वह तीन घंटे किसी तरह शहर में घूमते काटता है ।
शाम को प्रभा और समर घर लौट आते हैं । समर के कमरे में ।
समर जूते उतार रहा है ।

मामी: कहो लालाजी, कुछ बात बनी? जब हम पहली बार सिनेमा १११
गये, तब तुम्हारे भैया तो...

समर: मामी, अब मुझे आराम करने दो । थक गया हूं । ११२

मामी: अरे । शाम से ही थक गए ? अभी तो रात पड़ी है । ख़ैर, ११३
आराम करो । मैं जाती हूं । मैं तो यह कहने आई थी कि
कल दिन का खाना ख़ास तौर से प्रभा बना रही है । तुम्हारे
भाई साहब तो कहते थे, खाना क्या बनाती है, अमृत
बनाती है, अमृत ।

समर: उन्हें क्या पता ? ११४

मामी: जब देखने गए तभी खा आए होंगे । तारीफ़ के मारे घर ११६
भरे दे रहे हैं । कल तुम भी देख लेना ।

00 रसोईघर । प्रभा थाली में समर के लिए खाना परोस रही ११७
है । अम्मा, मामी, ध्यान से देख रही हैं । मुन्नी बाहर
से आती है ।

मुन्नी: मामी, चलो सब लोग आ गये हैं । ११८

मामी: अभी आती हूं । ज़रा लालाजी को खा लेने दो । ११९

00 समर एक कौर मुंह में डालता है और ज़रा-सा चबाकर १२०
थूक देता है ।

अम्मा: क्या हुआ ? १२१

समर: हुआ मेरा सिर । दाल कड़वी ज़हर बना रखी है । मुझे १२२
नहीं खाने हैं ये कृष्णन भोग ।

00 समर तेज़ी से रसोई घर के बाहर निकल जाता है । १२२

प्रभा: दाल तो मैंने चख ली थी । १२३

भाभी: 00 बाहर से आते हुए 00 बड़ी चली थी रिस्टवाच पहनकर खाना बनाने । बोलो, घड़ी का तुम चूल्हे में क्या करोगी? उल्टी साड़ी पहनकर घूमेंगी घर में । १२४

00 मुन्नी समर को समझाने उसके कमरे में जाती है । १२५

मुन्नी: ऐसा तो होता ही रहता है भैया । जिसके साथ सात भांवरें डालके लाए हो, उसे तो निभाना ही पड़ेगा । आख़िर वह बेचारी भी क्या करे ? क़सूर उसका भी हो तो भैया ऐसे मौक़ों पर माफ़ कर देना ही ठीक है । दो दिन के बाद विदा है । उसके भाई उसे लेने आएंगे । क्या कहेगी घर जाकर ? १२६

00 भाभी नौकर के साथ समर के कमरे में आती है । पंखे की ओर इशारा करती है । १२७

भाभी: यह रहा । ले चल । १२८

मुन्नी: भाभी, तुम ठहरो । मैं पहुंचा देती हूं । १२९

भाभी: कहा, दो दिन और रहने दो बिजली का पंखा, तो कहने लगे घर में बीमार है, पंखे की ज़रूरत है । कल तक सब ठीक थे, आज सब बीमार पड़ गए ! १३०

समर: बिजली का पंखा दिखाने की ज़रूरत ही क्या थी? उनसे कहो यह बिजली का कनेक्शन भी ले जाएं । इसे भी भेजो । १३१

भाभी: अब तुम्हें हर चीज़ से चिढ़ होने लगी । १३२

समर: देखो, मुझे यहां चैन से सोने देना चाहो, तो सोने दो । नहीं तो मैं दिवाकर या किसी और दोस्त के यहां जाकर पड़ा रहूंगा । १३३

भाभी: लालाजी, तुम्हें जब ज़िद चढ़ जाती है तो किसी की नहीं मानते । अब यह भी कोई बात हुई । कभी कभी तो बड़ों का भी कहना माना करो । १३४

समर: इस कहां मानकर तो यह सुख पाया । और क्या - क्या भुगतना पड़ेगा ? १३५

00 00 00 00

00 ढलती शाम । मुन्नी छत पर आती है और देखती है कि प्रभा अकेले है । १३६

मुन्नी: तुम यहां हो, भाभी । मैंने तो सारा घर ढूंढ मारा । १३७

प्रभा: कमरे में तुम सब थे । मैं यहां चली आई । १३८

मुन्नी: तुम भी कमरे में चली आती । इस अंधेरे से तो अच्छा ही है । १३९
चलो, अब नीचे चलो ।

प्रभा: यहां बैठते हैं थोड़ी देर । यहां कैसी ठंडी हवा चल रही १४०
है ।

मुन्नी: अब छोड़ो इस ठंडी हवा को । चलो नीचे । यह सब तो १४१
होता ही रहता है भाभी । अभी से ऐसा चलता रहेगा,
तो बाद में... मेरी हालत तो तुम्हें मालूम है, भाभी ।

प्रभा: बैठो न, मुन्नी । तुम्हारी भी शादी की रात से ही १४२
वह नाराज़ हैं?

मुन्नी: मेरी बात छोड़ो, भाभी । मेरी तो क़िस्मत ही फूटी है । १४३
भैया ऊपर से कैसे भी हों, दिल से बहुत नरम हैं । तुम
भाभी, एक बार खुद बात करोगी, तो बस । भैया
का सब गुस्सा ठंडा हो जाएगा ।

प्रभा: मुझे शर्म लगती है । मैं क्या बात करूं? १४४

मुन्नी: तुम तो अंग्रेज़ी में पास हो । तुम्हें बात करना तो ज़्यादा १४५
अच्छा आता होगा ।

प्रभा: स्कूल में पति से बात करना थोड़े ही सिखाते हैं । १४६

मुन्नी: फिर मैं बताती हूं । कहना... 00 हंसती है 00 १४७

कुछ भी कह देना । एक काम करो भाभी । भैया को
अभी दूध देना है । मैं नहीं जाती । तुम ले जाओ ।
अब न मानूं । तुम्हीं को ले जाना पड़ेगा । मेरी
अच्छी भाभी ।

00 00 00 00

00 समर का कमरा । समर और भाभी चारपाई पर १४८
बैठे हैं । प्रभा दरवाज़े के पास आकर रुक जाती है ।
उसके हाथ में दूध का गिलास है ।

भाभी: अरी, तुम क्यों लाईं? कोई और नहीं था? १४९
यह मुन्नी बीबीजी भी ग़ज़ब करती हैं । नई बहू को
दो दिन तो बैठने दिया होता । 00 प्रभा से 00
अब यहां तक लेकर आई हो तो दे दो जाकर । शरम
काहे की ।

नीचे से मुन्नी की आवाज़: भाभी... सुबह के लिए दाल कितनी भीगेगी? १५०

भाभी: अभी आई । 00 प्रभा से 00 तुम्हीं छोटी बन जाओ । १५१
माफ़ी मांग लो । आख़िर पति ही तो है ।

00 धीमी आवाज़ में प्रभा को अपनी राय देकर भाभी नीचे १५२
चली जाती है । प्रभा और समर अकेले हैं । समर कल्पना
करता है कि प्रभा उसके बहुत पास आई है ।

प्रभा: मुझे माफ़ कर दीजिये । यह दूध पी लीजिये । १५३

०० समर खुश होकर दूध पीने लगता है । कितनी अच्छी है प्रभा की निकटता । लेकिन असल में प्रभा दरवाज़े के पास खड़ी है, और वह चारपाई पर बैठा है । एकाएक समर उठ खड़ा होता है और कमरे से बाहर निकल जाता है । प्रभा हल्की आवाज़ में पुकारती है १५४

प्रभा: सुनिये । १५५

०० ०० ०० ००

०० प्रभा का भाई उसे मायके ले जाने आया है । प्रभा बड़ों का पैर छूकर विदा लेती है । १५६

अम्मा: ०० प्रभा के भाई से ०० बेटा, संभालकर ले जाना। अमर, तू स्टेशन तक चला जा । १५७

०० समर खिड़की से प्रभा को तांगे पर सवार होते देखता है । १५८

०० ०० ०० ००

०० बैठक में । पिताजी हुक्का पी रहे हैं । एक आदमी शादी सम्बन्धी खर्च का बिल लेकर आता है । पिताजी बिल को देखते हैं । १५९

पिताजी: अरे भाई, इतने रुपये कैसे हो गये ? १६०

आदमी: बाबूजी, सब हिसाब से लगाया है । फिर जानो, शादी - ब्याह में खर्चा तो होवे ही है । १६१

पिताजी: अच्छी शादी कराई साहबज़ादे ने । अगले महीने ले जाना । १६१'

०० बिलवाला आदमी चला जाता है । भाभी और बड़े भैया पिताजी के पास आते हैं । भाभी के हाथ में साली थैली है । १६२

पिताजी: सब्ज़ी फिर खत्म हो गई ? १६२'

बड़े भैया: वो ... समर की भाभी के कहे, सुना ... छोटी बहू पहन गई । १६३

पिताजी: कहे पहन गई? समर ने कहा नहीं कुछ ? १६४
०० चिल्लाते हैं ००
अरे समर । साहबज़ादे, पता नहीं, अपने आप को क्या तीसमारखां समझते हैं । बीवी से नहीं बोलेंगे । खुद उल्लू - से घूम फिरते हैं । घर को होटल समझ रखा है । बिल्कुल, हड्डे तो हमें ही पेलने हैं ज़िन्दगी भर ।

00 समर कमरे में चारपाई पर लेटा किताब पढ़ रहा है । भाभी समर के पास आती है । १६५

भाभी: देखते जाओ, लालाजी । सब ढंग पर आ जाएगी । औरत को तो जब तक दबाकर नहीं रखा जाता, हाथ नहीं आती । हमारे बाबा कहा करते थे, औरत तो लकड़ी का बंदर है । इतना भी मुंह न लगाए कि आगा - पीछा कुछ दिखाई न दे । हमें तो, लालाजी, तुम भरी नींद में उठा दो, बिना देखे सारा मिर्च - मसाला डाल देंगे । अब इसमें क्या फ़ायदा कि किताबें तो तुमने लाखों पढ़ लीं ? आने के नाम ख़ाक - धूल नहीं । हमारे बड़े भैया वाली भाभी भी ऐसी ही आई थी । किसी को कुछ समझती ही नहीं थी । सो भइया ठहरे मरद । दो दिन में सारा नज़ला झाड़ दिया । वह तो किसी किसी की आदत ही होवे, लालाजी । बिना कुटे - पिटे रास्ते पर ही नहीं चल सके । अब हमारी भाभी बिल्कुल ठीक है । भैया की आंखों में ग़ुस्सा देखा नहीं कि पत्ते की तरह यों कांप जावे । १६६

समर: भाभी, अब कुछ पढ़ाई कर लेने दो । बहुत दिनों से किताबें छुई ही नहीं । १६७

00 कालेज में क्लास लगा हुआ है । शिक्षक इतिहास के विषय में कुछ कह रहे हैं । समर अपने विचारों में डूबा हुआ है । १६८

शिक्षक: वह अपने पिता रुस्तम के हाथों अनजान रूप से मारा जाता है । वह पूछता है कि क्या तुम रुस्तम हो ? वह कहता है, मैं रुस्तम नहीं हूं । तुम उस में क्या..
...
00 कौओं की आवाज़ 00
... मतलब है इस बात का ? इस तरह से वह बात ...
00 कांव, कांव 00
... सोचता यह है ...
00 कांव, कांव 00 १६९

00 समर कालेज की गेट से निकलकर रेलवे स्टेशन की ओर जाता है । १७०

00 कालेज के कैफ़े में । समर अकेले बैठा कुछ सोच रहा है । अगला सीन क्लास में है । शिक्षक हाज़िरी ले रहे हैं ... १७१

शिक्षक: आन्सर योर रोल काल प्लीज़ । अमल कुमार चक्रवर्ती ? १७२

चक्रवर्ती: येस सर । १७३

शिक्षक: वशिष्ठ कुमार चतुर्वेदी ? १७४

चतुर्वेदी: प्रेज़ेन्ट सर । १७५

शिक्षक: रमेश चन्द्र ? १७६

चन्द्र: येस सर । १७७

शिक्षक: समर ठाकुर ? १७८

०० कोई जवाब नहीं । समर पार्क में घूम रहा है । दिवाकर साइकिल पर आता है । समर को देखकर साइकिल से उतर जाता है । १७९

दिवाकर: वाह बेटा! तुम यहां घूम रहे हो? कालेज क्यों नहीं गया ? १८०

समर: तबीयत नहीं हुई । १८१

दिवाकर: यार, तू आजकल मरियल - सा क्यों घूमता - फिरता है ? १८२

समर: नहीं तो... १८३

दिवाकर: चल, फ़ुटबाल के सेमी - फ़ाइनल्ज़ हो रहे हैं । चल । १८४

समर: नहीं दिवाकर, मुझे घर जाना है । १८५

दिवाकर: अरे, बीवी मेरे घर में है यार, चल न । १८६

०० वे दोनों फ़ुटबाल मैच देखने जाते हैं । समर का ध्यान खेल में नहीं है । वह मौक़ा देखकर बाहर चला आता है । शाम का समय । समर प्रभा को चिट्ठी लिखना शुरू करता है, फिर काग़ज़ को फाड़ डालता है । १८७

समर: ०० अपने आप से ०० मुझे क्या वह एक ख़त तक नहीं लिख सकती थी? ०० लेटकर सोचने लगता है ०० मेरी बीवी चार दिन मेरे घर रही, और मैंने एक बात तक नहीं की । क्योंकि शादी मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कर दी गई थी । छी:! यह भी कोई ठोस कारण है न बोलने का? समर, तुम गधे हो, बेवक़ूफ़! १८८

०० ०० ०० ००

मुन्नी: भैया... तुम भाभी से ज़रा भी नहीं बोले ? १८९

समर: नहीं । १९०

मुन्नी: उस दिन सिनेमा में ? १९१

समर: पानी दे एक गिलास । १६१,१

मुन्नी: भैया, दूसरी शादी करोगे ? १६१,२

समर: एक ही शादी काफ़ी नहीं है ? दूसरी किसके नाम को रोयेगी ? शादी की बात कौन कर रहा था ? अम्मा ? १६१,३

मुन्नी: नहीं, यों ही पूछ रही थी । ये रात को खाने के बाद अम्मा - भाभी में कुछ इसी तरह की बातें ... १६१,४

समर: यही सब चलता रहा तो देखना, एक दिन मैं घर छोड़कर चला जाऊंगा । सब अपना - अपना राग अलापते हैं । दूसरी शादी ! १६१,५

मुन्नी: भैया, एक बात बताऊं ? उस दिन तुम्हारे खाने में जो नमक ज़्यादा था न, वो बड़ी भाभी ... १६१,६

०० मुन्नी भाभी को रसोई घर में आते देखकर चुप हो जाती है । भाभी के हाथ में धोए हुए कपड़े हैं । १६१,७

भाभी: मैं भागी भागी आई देखने कहीं लालाजी चुपचाप बैठे तो नहीं हैं । आजकल न जाने क्या हो गया है, बिना खाए उठकर चले जाते हैं । मुन्नी बीबी, कैसी अच्छी हो, ज़रा इन्हें फैला दो । १६१,८

०० मुन्नी कपड़े लेकर बाहर जाती है । समर भी उठने लगता है । १६१,९

भाभी: हाय, अभी तुमने खाया ही क्या है ? तुम्हें मेरी कसम है, लालाजी, इस रोटी को तो खाते जाओ । ... इस बार अभी से ही जाड़ा पड़ने लगा । दीवाली के और कितने दिन हैं, लालाजी ? १६१,१०

समर: होंगे कोई दस पंद्रह दिन । १६१,११

भाभी: इस दीवाली को पूरे चार महीने हो जाएंगे तुम्हारी शादी को । तुम्हारा ब्याह भी क्या हुआ लालाजी ? क्या क्या अरमान थे, सब पर पानी फिर गया । फिर लिखा है भेजने को । १६१,१२

०० समर उठते हुए भाभी की ओर देखता है । १६१,१३

समर: किस को ? १६१,१४

०० कट । अगला दृश्य बैठक का है । पिताजी हुक्का पी रहे हैं । दर्शक को लगता है कि समर ने प्रश्न पिताजी से पूछा है और अगला वाक्य पिताजी का जवाब है । १६१,१५

पिताजी: अपनी बहू को । अब लिवा लाओ उसे, बहुत दिन हो गये । १६१,१६

०० समर पिताजी के सामने खड़ा है । १६१,१७

पिताजी: बड़ी बहू के भी दिन पूरे हो रहे हैं, पहला बच्चा है । तुम्हारी अम्मा तो चूल्हे में सिर फोंकते - फोंकते इस १६१,१८

हालत को आ गई । बहुत किया उस बेचारी ने भी ।
घर पर एक हाथ और हो जाएगा तो मदद हो जाएगी ।

समर: मैं नहीं जाऊंगा, पिताजी । अमर को भेज दीजिये । १६१,१६

पिताजी: क्यों ? तुम्हारा क्या दम निकलता है बहू का नाम सुनकर ? १६१,२०
शेरनी है न, सो खा जाएगी ? अच्छी झुकावा औलाद हुई है । अपनी तीरन्दाज़ी मैं किसी को अपने सामने अदते ही नहीं । असल का हो तो ज़िन्दगी भर मत बोलियो ।

०० समर सिर झुकाये पिताजी की डांट सुनता है । जवाब १६१,२१
नहीं देता । भाभी ऊपर अपने कमरे में आराम कर रही है । किसी के आने की आवाज़ सुनकर जल्दी से उठ जाती है और आने लगती है । सीढ़ियों पर समर और भाभी बातें करते हैं ।

भाभी: लालाजी, सुनो । बाबूजी अम्माजी से आज सुबह क्या कह रहे १६१,२२
थे, मालूम है ? कह रहे थे समर की बहू फिर आ रही है । न हो तो समर से कहो किसी वैद्य को अच्छी तरह से दिखा दे । जो फ़ीस होगी, दे देंगे ।

समर: क्यों, मुझे क्या हुआ ? १६१,२३

भाभी: ०० मुस्कुराती हुई ०० लो, यह भी मैं बताऊं ? १६१,२४

और सुनो, आ तो रही है लेकिन दबाकर रखना । कहे देती हूं, कसम से, पछताओगे नहीं तो । छोटे लालाजी आज चले गये हैं लिवाने ।

०० समर सीढ़ी चढ़कर छत पर आता है । मुन्नी कपड़े पसार १६१,२५
रही है । वह समर की ओर देखकर बोलती है ...

मुन्नी: भैया, तुम लोग तो पढ़े - लिखे हो । १६१,२६

समर: तुम लोग कौन ? १६१,२७

मुन्नी: तुम, भाभी । १६१,२८

समर: तो ? १६१,२९

मुन्नी: कल वह आ रही हैं । तुम उन्हें बैठकर समझा नहीं सकते, १६१,३०
क्या चाहते हो, कैसे चाहते हो ? अगर औरत को बैठकर कोई समझाए तो ऐसा थोड़े ही है कि ...

०० समर को यह विषय पसन्द नहीं है । वह चाहता है कि १६२
मुन्नी बात बदल दे ।

समर: मुन्नी ! १६३

मुन्नी: हम तो बेपढ़े हैं, लेकिन तुम ... भाभी ... भैया, तुम १६४
भाभी से बोलोगे न ?

समर: जा मुन्नी, तू नीचे जा । १९५

०० समर मुड़कर आकाश की ओर देखता है । उसे कुछ पक्षी १९६
उड़ते नज़र आते हैं । वह ख़यालों में डूबा हुआ है । घर
के बग़लवाली गली । समर साइकिल लिए कहीं जाने को
तैयार है । अमर घर की ओर आ रहा है ।

अमर: समर भैया, भाभी को लेकर आ गया हूं । भैया, साइकिल १९७
ले जाऊं ?

समर: जल्दी आ जाना । १९८

अमर: बड़ी मुश्किल से भेजा है, भैया । भाभी के घरवाले तो १९९
बहुत ख़राब हैं । आइंदा से तो मैं नहीं जाऊंगा ।

समर: क्यों ? पकड़कर पीट दिया क्या ? २००

अमर: अरे, उठते - बैठते जब देखो तब बुराई करते रहते हैं । २०१
भाभी ऐसी है, अम्मा वैसी है । हम लोग क्या सब ...

समर: और मैं ? २०२

अमर: हां, तुम्हारी तो सब तारीफ़ करते हैं । २०३

अमर: तारीफ़ ? २०४

अमर: सिर्फ़ तुम्हारी नहीं, भैया । मेरी भी, मैं भी तो ख़ूब पढ़ता २०५
हूं न ?

समर: ला, साइकिल मुझे दे । २०६

अमर: अरे, भइया ? २०७

०० साइकिल पर सवार होकर समर दिवाकर के घर की ओर २०८
निकल जाता है । अगला सीन । समर साइकिल पर सवार
है । पार्क के रास्ते दिवाकर के घर जा रहा है । बैक
ग्राउंड में औरतों का संगीत सुनाई देता है ।

महिलाएं: बन्ने रे तेरी अंखियां सुरमेदानी । २०९
बन्ने रे तेरे बाबा लाख हजारी ।
बन्ने रे तेरे बाबा लाख हजारी ।
बन्ने रे तेरे ताऊ का ओहदा भारी ।
बन्ने रे तेरे तनऊ का ओहदा भारी ।
बन्ने रे तेरी दादी लाल गुलाबी ।
बन्ने रे तेरी दादी नख़रे वाली ।
बन्ने रे तेरी अंखियां सुरमेदानी ।
बन्ने रे तेरी अंखियां सुरमेदानी ।
बन्ने रे तेरे चाचा लाख हजारी ।
बन्ने रे तेरे चाचा लाख हजारी ।
बन्ने रे तेरे फूफे का ओहदा भारी ।
बन्ने रे तेरी चाची लाल गुलाबी ।
बन्ने रे तेरी बुआ नख़रे वाली ।

बन्ने रे तेरे बाबा का ओहदा भारी ।
बन्ने रे तेरी मौसी लाल गुलाबी ।

00 दिवाकर का घर । समर दिवाकर के ड्राइंग रूम में दाख़िल होता है । २१०

दिवाकर: ओ ओ, आओ, आओ समर साहब । रास्ता कैसे भूल गये आज तुम? २११

समर: कल का मैच कैसा रहा? २१२

दिवाकर: कहा 'चलकर देख ले फ़ाइनल' तो आया नहीं । कमाल का मैच था । तूने मिस किया, अपना लेफ़्ट आउट इतना धांसू खिलाड़ी है, यार, हाफ़ टाइम से पहले ही यूं मारके फिर तीन गोल मारे! २१३

00 दिवाकर खिलाड़ी की नक़ल करता है । समर अपने आप में खोया हुआ है । वह दिवाकर की बातें नहीं सुनता । सोचता है... २१४

समर की आवाज़: और कोई लड़की होती तो घर जाकर वह लड़ाई करती कि मुंह दिखाने क़ाबिल ही नहीं रहता । बताया होगा कि पढ़ने में लगा हुआ है । इम्तहान पास आ रहे हैं -- यही तो फ़र्क़ है एक पढ़ी - लिखी में और बेपढ़ी में । अरे ज़रा नमक ज़्यादा हो गया तो ऐसी क्या मुसीबत आ गयी ? नयी - नयी आयी थी, घबरा गयी होगी । मुझसे २१५

कोई कह दे 'खड़े होकर क्लास में एक पेज पढ़ दो' खड़ा - खड़ा हकलाता रहूंगा ।

दिवाकर: 00 महसूस करता है कि समर का ध्यान कहीं और है 00 अबे, कुछ सुन भी रहा है कि नहीं तू? हैं? २१६

समर: आ... हां, क्या कह रहा था तू? २१७

दिवाकर: क्यों बे .... बड़ा ख़ुश नज़र आ रहा है तू। क्या बात है? २१८

00 समर साइकिल पर शहर के पार्क से गुज़रते हुए घर लौट आता है । वह उत्साह से सीढ़ियां चढ़ता है । कमरे का दरवाज़ा खोलकर वह पुकारता है... २१९

समर: प्रभा! २२०

00 प्रभा दौड़कर उसके पास आती है । लेकिन यह तो कल्पना का अंदाज़ है । यथार्थ में समर सारे उत्साह को दबाकर घर के अंदर प्रवेश करता है । मुन्नी उसे ख़ुशख़बरी सुनाती है । २२१

मुन्नी: भैया, पता है? भाभी आ गई है । २२२

समर: 00 रूखी आवाज़ में 00 आ गई है तो मैं क्या करूं? २२३

00 समर अपने कमरे में आता है । उसे प्रभा की चप्पलें और २२४

पेटी नज़र आती है । वह प्रभा की चीज़ों को इधर-उधर पलटकर देख रहा है कि किसी के आने की आवाज़ सुनाई देती है । चौंककर समर कोई किताब उठाता है और पढ़ने लगता है ।

भाभी: घबराओ मत लालाजी, मैं हूं । पता नहीं प्रभा आई है? सुबह के गये अब आये हो? २२५

समर: वो इम्तहान नज़दीक आ रहे हैं न? इसलिए पढ़ाई करने चला गया था । २२६

भाभी: मुझे मालूम है । उलटी किताब लिए खड़े हो । चलो ससुराल से मिठाई आई है । खाओगे नहीं ? चलो। २२७

00 भाभी आगे और समर पीछे सीढ़ियों से नीचे उतर रहे हैं । २२८

समर: भाभी? २२९

भाभी: अब क्या हुआ ? २३०

समर: वो.. मैं बाद में खा लूंगा । अभी भूख नहीं है । २३१

भाभी: प्रभा अम्मा के पास है, तुम चलो अब । २३२

00 समर अपने कमरे में दरी पर लेटा है । किताब से पढ़ता है । २३३

समर: ओ दाउ यंग मैन । दि स्यर आव २३४
हैवन इज़ सौफ़्ट एन्ड वार्म
एन्ड प्लेज़ेन्ट । बट द ग्रेव
इज़ कोल्ड । हेवन्ज़
स्यर इज़ बेटर दैन द
कोल्ड डेड ग्रेव । बिहोल्ड मी
आइ एम वास्ट । ...

00 प्रभा कमरे में आती है । समर की आंखें किताब पर हैं लेकिन सारा ध्यान प्रभा की ओर । शायद प्रभा उससे बात करेगी । प्रभा अपनी पेटी से चादर और कपड़े निकालकर तुरंत बाहर चली जाती है । समर को प्रभा और भाभी की आवाज़ें सुनाई देती हैं । २३५

भाभी: नहीं, प्रभा, वहीं जाकर सोओ । यहां अभी समर के बड़े भैया आते होंगे । आख़िर तुम वहां सोना क्यों नहीं चाहतीं? २३६

प्रभा: नहीं भाभी । २३७

00 फ़्लैश बैक । समर को भाभी का मज़ाक़ याद आता है । पिताजी ने कहा था कि समर किसी वैद्य के पास जाये । २३८

समर: क्यों मुझे क्या हुआ ? २३९

भाभी: लो, यह भी मैं बताऊं ? २४०

00 फ्लैश बैक समाप्त । समर लालटेन की रोशनी में दरी पर लेटा हुआ है । २४१

भाभी की आवाज़: ऐसा नहीं करते, प्रभा । २४२

00 भाभी और प्रभा बड़े भइया के कमरे के बाहर बातें कर रही हैं । प्रभा चादर और कपड़े पकड़े खड़ी है । २४३

भाभी: तुम नई बहू हो । अभी तो तुम्हें सारी ज़िन्दगी बितानी है । मान जाते हैं । यह सब तो होता ही रहता है । २४४

प्रभा: ज़बरदस्ती वहां कहां जाकर सो जाऊं ? लिवाने तक तो आना नहीं चाहते । और तुम कहती हो वहां चली जा । एक चिट्ठी भी नहीं डाली । उनके बोर्ड के इम्तहान हैं, मैं क्यों तंग करूं? कुछ हो गया तो बाद में मेरा ही नाम लेंगे। २४५

00 दृश्य फिर से समर के कमरे का । वह प्रभा - भाभी की बातें सुन रहा है । २४६

प्रभा: कोई दुतकारता रहे और हम पूंछ हिलाते रहें -- मुझसे यह नहीं होगा । २४७

00 प्रभा तेज़ी से कमरे के अंदर आती है । दीवार के पास चादर बिछाकर लेट जाती है । समर चुप है । उसका चेहरा गुस्से से लाल है । उसके मन के विचार "वायस ओवर" के तरीके से हमें मालूम होते हैं । २४८

समर की आवाज़: लेट जाओ । मेरा क्या आता जाता है? सोचकर आई होगी कि दबाकर रखूंगी, पति पालतू कुत्ते की तरह दुम हिलायेगा । अरे, यहां यह भी नहीं पूछेंगे, क्यों पड़ी हो । मर जाओगी तो उठाकर फिंकवा देंगे । बाप को तो यहां सहते नहीं हैं, और तुम? हूं ! २४९

00 रसोईघर । तवे पर भाभी रोटी पका रही हैं । समर के आगे खाने की थाली है । २५०

भाभी: ना लालाजी, दूसरी बार बहू आई है और तुम ऐसी बातें कर रहे हो? २५१

समर: कोई पहली बार आये या दूसरी बार, जब मुझे उससे कुछ लेना देना नहीं तो मैं क्यों सरदर्द लूं? २५२

भाभी: अच्छा, लालाजी । तुम उससे इतने नाराज़ क्यों हो? २५३

समर: एक तो मुझे अभी शादी - वादी करनी नहीं थी, ज़बरदस्ती गले से पत्थर लटका दिया है । और फिर मुझे उसकी सूरत से भी नफ़रत है । २५४

भाभी: मुन्नी बीबीजी तो हमेशा गुनगान करती हैं । अम्माजी खुश तो नहीं हैं लेकिन कहती यही हैं कि ऐसी सुंदर बहू नहीं देखी कहीं । २५५

समर: नहीं देखी होगी । मुझे तो ऐसी कोई खास बात नहीं लगी । २५६

00 पलैश बैक समाप्त। समर लालटेन की रोशनी में दरी पर लेटा हुआ है। २४१

भाभी की आवाज़: ऐसा नहीं करते, प्रभा। २४२

00 भाभी और प्रभा बड़े भइया के कमरे के बाहर बातें कर रही हैं। प्रभा चादर और कपड़े पकड़े खड़ी है। २४३

भाभी: तुम नई बहू हो। अभी तो तुम्हें सारी ज़िन्दगी बितानी है। मान जाते हैं। यह सब तो होता ही रहता है। २४४

प्रभा: ज़बरदस्ती वहां कहां जाकर सो जाऊं? लिवाने तक तो आना नहीं चाहते। और तुम कहती हो वहां चली जा। एक चिट्ठी भी नहीं डाली। उनके बोर्ड के इम्तहान हैं, मैं क्यों तंग करूं? कुछ हो गया, तो बाद में मेरा ही नाम लेंगे। २४५

00 दृश्य फिर से समर के कमरे का। वह प्रभा - भाभी की बातें सुन रहा है। २४६

प्रभा: कोई दुत्कारता रहे और हम पूंछ हिलाते रहें -- मुझसे यह नहीं होगा। २४७

00 प्रभा तेज़ी से कमरे के अंदर आती है। दिवार के पास चादर बिछाकर लेट जाती है। समर चुप है। उसका चेहरा गुस्से से लाल है। उसके मन के विचार "वायस ओवर" के तरीके से हमें मालूम होते हैं। २४८

समर की आवाज़: लेट जाओ। मेरा क्या आता जाता है? सोचकर आई होगी कि दबाकर रखूंगी, पति पालतू कुत्ते की तरह दुम हिलायेगा। अरे, यहां यह भी नहीं पूछेंगे, क्यों पड़ी हो। मर जाओगी तो उठाकर फिंकवा देंगे। बाप को तो यहां सहते नहीं हैं, और तुम? हूं! २४९

00 रसोईघर। तवे पर भाभी रोटी पका रही है। समर के आगे खाने की थाली है। २५०

भाभी: ना लालाजी, दूसरी बार बहू आई है और तुम ऐसी बातें कर रहे हो? २५१

समर: कोई पहली बार आये या दूसरी बार, जब मुझे उससे कुछ लेना देना नहीं तो मैं क्यों सरदर्द लूं? २५२

भाभी: अच्छा, लालाजी। तुम उससे इतने नाराज़ क्यों हो? २५३

समर: एक तो मुझे अभी शादी - वादी करनी नहीं थी, ज़बरदस्ती गले से पत्थर लटका दिया है। और फिर मुझे उसकी सूरत से भी नफ़रत है। २५४

भाभी: मुन्नी बीबीजी तो हमेशा गुनगान करती हैं। अम्माजी खुश तो नहीं हैं लेकिन कहती यही हैं कि ऐसी सुंदर बहू नहीं देखी कहीं। २५५

समर: नहीं देखी होगी। मुझे तो ऐसी कोई खास बात नहीं लगी। २५६

भाभी: क्या कह रहे हो, लालाजी? पढ़ी - लिखी है सिलाई - कढ़ाई जानती है। बाजा भी बजा लेती है। रुपया नगद न लाई तो क्या हुआ? अच्छा, लालाजी, न हो तो एक ड्यूटी लगा दो-- मुबह जैसे ही उठे सामने हारमोनियम पकड़ा दो-- गाया करे, जागो मोहन प्यारे। 00 हंसती है 00 २५७

समर: तुम तो मज़ाक़ कर रही हो, भाभीजी। कुछ पढ़ाई करनी है, इसीलिए तो अपनी अलग कोठरी साफ़ की, और तुम उसमें इसको, उसको, और सारी दुनिया को घुसा दोगी तो कोई पढ़ेगा कैसे? २५८

भाभी: अब लालाजी, अम्माजी से कहूं। मुझे तो कोई और जगह दिखाई दे नहीं रही है। २५९

समर: अम्माजी से कहो, चाहे भैयाजी से। मुझे अलग जगह चाहिए, मुझे पढ़ाई करनी है। मेरी तरफ़ से चाहे सारी दुनिया भाड़ में जाये। २६०

00 प्रभा रसोईघर के दरवाज़े तक पहुंचकर रुक जाती है। समर तेज़ी से बाहर निकलता है, प्रभा की ओर देखता तक नहीं। प्रभा ऊपर कमरे में जाती है। सड़क से चूड़ी वाले की आवाज़ आ रही है: " बिल्लौरी चूड़ियां, कांगनी चूड़ियां " । प्रभा अनमने भाव से ट्रांज़िस्टर उठाती है। रेडियो की आवाज़: " यह विविध भारती है " । प्रभा को कालेज के दिन याद आते हैं। २६१

किस उत्साह से उसने अपनी सहेली को समर की तस्वीर दिखाई थी।

00 00 00 00

00 समर सीढ़ियां उतरकर रसोईघर की ओर जाता है। प्रभा सीढ़ियां चढ़ रही है। दोनों एक दूसरे से नहीं बोलते। रसोईघर में भाभी चाय बना रही हैं। उसे बच्चा होनेवाला है। २६२

समर: लाओ भाभी, यहीं दे दो, जूते पहने हूं। भाभी, तुम क्यों बेकार में पिसती हो? यह समय आराम करने का है। घर में कोई और नहीं है क्या? २६३

भाभी: मुन्नी तो अब पराई है, उसके हाथ का अम्मा - बाबूजी खायेंगे नहीं। रही प्रभा, सो नई बहू है। २६४

समर: अगर खाने का हक़ है तो काम करने के लिए लोग क्या बाहर से बुलाये जायेंगे? २६५

00 सीन समाप्त। बच्चे के रोने की आवाज़। अम्मा कमरे से बाहर निकलती है। मुन्नी उन्हीं की ओर आ रही है। २६६

अम्मा: लो, घर में पहले ही भवानी आई है। चलो। २६७

00 मुन्नी खुशखबरी सुनाने समर के पास जाती है । २६८

मुन्नी: भैया, मुंह मीठा कराओ, सब से बड़े चाचा बने हो । २६९

00 अब घर चलाने, खाना पकाने का सारा भार प्रभा पर पड़ता है । भाभी नई बच्ची की देखभाल में लगती है । २७०
प्रभा चूल्हे से बरतन उठाकर चूल्हे पर तवा रखती है, और रोटी बेलने लगती है । तभी अमर अन्दर आता है । वह जल्दी में है ।

अमर: भाभी, जल्दी, देर हो रही है । २७१

मुन्नी की आवाज़: छोटी भाभी, बच्ची के नहाने का पानी ले आओ, जल्दी । २७२

00 प्रभा पानी का बरतन लेकर बाहर जाती है । इसी बीच पिताजी रसोईघर में आते हैं । २७३

पिताजी: छोटी बहू कहां गई? २७४

अमर: बच्ची के नहाने का पानी लेकर गई हैं । २७५

पिताजी: तुझे खाना देने वाला कोई नहीं है? 00 तब तक प्रभा लौट आती है । पिताजी प्रभा को कहते हैं:00 मेरा खाना नीचे भिजवा देना, दो जनों का । एक मेहमान भी है । २७६

00 पिताजी बाहर चले जाते हैं । प्रभा फिर से रोटी बेलना शुरू करती है । अमर को कहती है: २७७

प्रभा: अभी बनाकर देती हूं । हां २७८

अम्मा की आवाज़: अरी बहू, यह जूठन कब तक पड़ी रहेगी? २७९

00 प्रभा जूठे बरतन उठाने जाती है । अम्मा पिताजी के हाथ धुला रही हैं । पिताजी देखते हैं कि प्रभा ने घूंघट नहीं काढ़ा है । २८०

पिताजी: 00 अम्मा से 00 देखा? फिर बहू और बेटी में फ़र्क़ ही क्या रह गया? बेटी भी मुंह खोले घूमती है और बहू को भी पता नहीं पल्ला किधर जा रहा है । २८१

00 प्रभा आंगन में बरतन मांज रही है । अम्मा प्रभा के पास जाकर उसे डांटने लगती हैं । २८२

अम्मा: सुना तूने । जो देखे है, हमारे कर्मों को थूके । अब नामकरण के दिन सत्यनारायण की कथा होगी । सारी दुनिया भर से लोग आएंगे । सारी बिरादरी में क्या नाक कटवायेगी घर की? २८३

00 नामकरण का दिन । मंत्र पढ़े जाते हैं । महिलाओं का संगीत । २८४

पंडित: साहब, चलो पंक्ति में बैठ जाओ । २८५

आवाज़: आओ, भाई, चलो । २८६

00 प्रभा रसोईघर में । मेहमानों के लिए खाना तैयार है । २८७
प्रभा बरतन मांजने के लिए बाहर निकलती है । गणेश पूजा
का ढेला गमले में पड़ा हुआ है । प्रभा अनजाने में ढेले की
मिट्टी से बरतन मांजने लगती है । समर और मुन्नी
खाना परोस रहे हैं । उन्हें अम्मा की आवाज़ सुनाई
देती है ।

अम्मा की आवाज़: अरे, अरे, यह क्या कर रही है? गणेशजी से २८८
बरतन साफ़ कर रही है? अक़्ल ठिकाने है कि नहीं तेरी ?

00 अम्मा सहे - सहे प्रभा को डांट रही है । २८९

अम्मा: जब कुछ कहे नहीं तो सिर पे ही चली आती है । आग २९०
लगे ऐसी पढ़ाई में । हाय राम ! पता नहीं अब क्या होगा ?

प्रभा: मुझे पहले पता होता, मांजी, तो कभी नहीं करती । २९१
मैंने समझा कोई सादा मिट्टी का ढेला है ।

अम्मा : सादा मिट्टी का ढेला है ? हाय राम ! और हमारी २९२
पुरखन हमें जवाब दिये चली जा रही है । तूने समझा काहे
को ? तेरी हिये माथे की फूट गयी थी? दिखाई
नहीं दिया उस पर कलावा बंधा था ? बात पर बात

कहे चली आ रही है । जो एक भी बात बिना जवाब दिये
छोड़ी हो !

00 भाभी, मुन्नी और पीछे से समर, अम्मा और प्रभा के पास २९३
आते हैं ।

भाभी: मेरी बच्ची को कुछ हो गया तो इसका क्या जायेगा ? २९४
हे भगवान, तू देखनेवाला है, दुनिया कुढ़ - कुढ़कर
मरी जाती है ।

समर: मुन्नी, क्या बात है ? २९५

अम्मा: आज पंडितजी ने जिस गणेशजी की पूजा की, तेरी पढ़ी - २९६
लिखी बहू ने उनसे जूठे बरतन मांज लिए ।

भाभी: 00 रोते हुए 00 हे भगवान, मेरी बच्ची को देखना । २९७

00 समर तेज़ी से आगे आता है और प्रभा को एक तमाचा २९८
लगाता है ।

समर: 00 गुस्से से उबलते हुए 00 हरामज़ादी, यहां रहना है, २९९
ठीक से रहो, नहीं तो भागो यहां से । बड़ी नास्तिक
की बच्ची बनी है ।

00 समर ऊपर चला जाता है । अम्मा ज़रा नरम आवाज़ में ३००
बोलती हैं:

अम्मा: अरी, बेटी, ज़रा सोच-समझ के काम करते हैं। हैं? ३०१

00 समर जल्दी से अपने कमरे में आता है। बिस्तर पर लेट जाता है। उस ने गुस्से में क्या कर डाला? वह अपने प्रति घृणा महसूस करता है। ३०२

समर: यही आदर्शवाद है? कायर! नीच! स्त्री पर हाथ उठाया तूने। यही तेरे राम बनने के सपने हैं? ३०३

00 00 00 00

00 रसोई घर में। प्रभा चाय बना रही है। मुन्नी पास बैठी है। ३०४

प्रभा: 00 चाय ढालते हुए 00 यह अपने भैया को दे आ। आज अभी तक नीचे नहीं आये हैं। ३०५

मुन्नी: रख दे यहां, खुद ही आकर पी लेंगे। ३०६

प्रभा: दे आ, मुन्नी। ३०७

00 मुन्नी चाय की थाली लेकर समर के कमरे में जाती है। कमरा खाली है। ३०८

समर अपने ख़यालों में खोया बाज़ार से गुज़रकर रेलवे स्टेशन की तरफ़ जाता है। रेलवे पुल से आनेवाली गाड़ी को देखता है। ३०९

जानेवाली गाड़ी को देखता है। बार बार उसे प्रभा को तमाचा मारने का दृश्य याद आता है।

00 दिवाकर की बैठक में। ३१०

दिवाकर: आख़िर बात क्या है? ३११

समर: बस मैंने तय कर लिया है। इधर उधर वक़्त बरबाद न करके सारा समय पढ़ाई में लगाना है। बहुत हो चुका है। ३१२

दिवाकर: अरे कुछ फूटेगा भी? ३१३

समर: यार, घर में पढ़ाई ठीक से नहीं हो पाती और इधर इम्तहान को एक महीना भी नहीं है। मैं यहां आकर पढ़ाई करूं। ३१४

दिवाकर: अपनी वाइफ़ से झगड़के तो नहीं आ रहा तू? ३१५

00 00 00 00

00 अम्मा पूजा संपन्न करके बाहर आती हैं। प्रभा साड़ी फैला रही है। ज़रा दूरी पर समर बाल काढ़ रहा है। ३१६

अम्मा: बहू, तू घर चिट्ठी-विट्ठी नहीं डालती? इनके पास तेरे बाप की चिट्ठी आई है। पूछा है तू बीमार तो ३१७

नहीं है?

प्रभा: क्या लिखूं अम्माजी? आप देख ही रही हैं सब कुछ ठीक है। ३१८

अम्मा: फिर भी बिटिया, कभी कभी डाल दिया कर
दो हर्फ़। मां - बाप का मन है। लिखा है, पांच,
छ: खत लिखे, तूने एक का भी जवाब नहीं दिया। ३१९

प्रभा: लिखूंगी, अम्माजी। ३२०

अम्मा: और यह क्या शकल बना रखी है कंजड़ों-सी? जाने कब से
सिर नहीं धोया। कभी कभी धो लिया कर कलमुंही।
पता नहीं कितनी जुएं पड़ गई हैं। खाने में जाती होंगी। ३२१

00 00 00 00

00 रसोईघर। अमर खाकर चला जाता है। भाभी रसोईघर
की तरफ़ आती हैं। ३२२

अमर की आवाज़: अम्मा, मैं जा रहा हूं। ३२३

मुन्नी की आवाज़: अम्मा, देखो, यह अमर जा रहा है। ३२४

अम्मा की आवाज़: रोटी तो खाता जा बेटे। ३२५

भाभी: 00 प्रभा से 00 दूध हो गया प्रभा? बच्ची का वक्त ३२६

हो गया है।

00 दूध उबलकर बरतन से चूने लगता है। ३२७

प्रभा की आवाज़: अभी दूसरा किये देती हूं। ३२८

भाभी: 00 भाभी सबको सुनाने के लिए चिल्लाकर बोलती हैं 00 ३२९
लो, यहां तो दूध फैलाया जा रहा है।

00 अम्मा बाहर के दरवाज़े के पास बैठी पूजा कर रही हैं। ३३०

अम्मा: फैला दिया दूध? चलो, अच्छा हुआ। उनका तो ३३१
बाप पूरी भैंस बंधवा गया है न? समझ में नहीं आता
हाथ - पैरों में दम भी है या नहीं। थूथन ऊपर उठाकर
काम करेगी। मस्ता रही हैं। अब बोलो बच्ची बेचारी
भूखी मरेगी क्या?

00 पूजा खत्म करके अम्मा रसोईघर में आती हैं। ३३२

अम्मा: क्या घूरे जैसी हालत बना रखी है रसोई की। चकला ३३३
इधर पड़ा है, बेलन उधर लुढ़क रहा है। खाने बैठो तो
उबकाई आवे। दसवां पढ़ी हैं ये, दसवां। आग लगे
ऐसी पढ़ाई में।

प्रभा: अनजाने में फैल गया, अम्माजी, दूसरा कर तो रही हूं। ३३४

00 अम्मा, भाभी, पीछे मुन्नी दिखाई देती है। समर उसके पीछे दरवाज़े से झांक रहा है। ३३५

अम्मा: लो, ऊपर से ज़बान लड़ा रही है। ३३६

भाभी: 00 समर से 00 देख लो, ज़रा-सा काम क्या करना पड़ा? हल्ले करवा रही है। हम नहीं किया करते थे काम? कहा कभी कुछ अम्माजी से? ३३७

00 प्रभा से 00 मेरे काम का अहसान तो जताइयो मत बहू। जितना तूने किया है सब ब्याज समेत चुका दूंगी। हां। कहीं कल को कहे। ३३८

00 बगल के कमरे में बड़े भैया दाढ़ी बना रहे हैं। वहीं से पुकारकर कहते हैं: ३३९

बड़े भैया: क्या दिन रात चख चख होती रहती है? दिन निकला और शुरू हो गया। ३४०

मुन्नी: अम्मा, चलो, नीचे धोबी आया है। ३४१

भाभी: 00 अभी भी प्रभा से नाराज़ है 00 देखा? ३४२

मुन्नी: भाभी, तुम भी चलो। मैं दूध लाती हूं। ३४३

00 बड़े भैया दाढ़ी बना रहे हैं। भाभी उनके पास आती हैं। ३४४

भाभी: तुम बीच में क्यों चख़ चख़ करते हो? ३४५

00 समर और मुन्नी रसोईघर के बाहर खड़े हैं। प्रभा अन्दर है। समर मुन्नी से कहता है: ३४६

समर: मुन्नी, मैं रात में नहीं आऊंगा। ये इम्तहान के दो चार दिन हैं। दिवाकर के यहां पढ़ाई करनी है। और वो... ३४७

00 समर वाक्य समाप्त किये बिना बाहर निकल जाता है। ३४८

समर के कमरे में। प्रभा पेटी ठीक कर रही है। मुन्नी को कपड़ों के बीच प्रभा की घड़ी नज़र आती है। उठाकर घड़ी को देखने लगती है। ३४९

मुन्नी: कितने की है, भाभी? ३५०

प्रभा: मुझे नहीं पता। पिताजी ने मंगाई थी पिछले साल। ३५१

मुन्नी: 00 घड़ी को कान से लगाती है 00 अरे, यह तो बंद पड़ी है। चाभी-आभी नहीं देती कभी? ३५२

प्रभा: किस लिए? ३५३

मुन्नी: यूं ही ...कभी टाइम-वाइम देखना हो। ३५४

आवाज़: बिल्लौरी चुड़ी ... ३५५

प्रभा: वहां थी तो रोज़ चाबी देती थी । स्कूल टाइम से जाना पड़ता था । घर में पढ़ाई करनी पड़ती थी । पिताजी को खाना भी वक़्त से देना पड़ता था । ३५६

मुन्नी: यहां भैया भी तो देख सकते हैं । आजकल उनके इम्तहान हो रहे हैं । तुम भी टाइम देख सकती हो । ३५७

प्रभा: तुम्हारे भैया कभी आते हैं तो घर देर से । और फिर मुझे यहां टाइम देखकर करना ही क्या है ? ३५८

oo समर सीढ़ियों से ऊपर आता है और प्रभा सीढ़ियों से नीचे उतरती है । दोनों चुप । ३५९

oo oo oo oo

oo छत पर । मुन्नी प्रभा के बाल धुलवा रही है । ३६०

मुन्नी: भैया कल कह रहे थे, तुम कितनी दुबली हो गई हो । तबियत तो ठीक है ? ३६१

प्रभा: ला, तौलिया दे । ३६२

मुन्नी: और कह रहे थे बेकार की ज़्यादा मेहनत मत किया कर । ३६३

वह ख़ुद रसोईघर में आकर सा लिया करेंगे । भाभी, एक अच्छी पिक्चर आई है । ३६४

प्रभा: हमें कौन ले जाएगा ? ३६५

मुन्नी: ले तो गए थे एक बार, शादी के बाद । ३६६

प्रभा: हां, ले गए थे, तांगे में घुमाकर ले आए । ३६७

मुन्नी: अरे, तुमने बताया भी नहीं ? ३६८

प्रभा: क्या बताती ? ३६९

मुन्नी: अच्छा, मैं पकड़ती हूं भैया को । ३७०

oo मुन्नी ऊपर से आवाज़ लगाती है । ३७१

मुन्नी: समर भैया, ज़रा ऊपर आना । oo फिर प्रभा से बातें करने लगती है oo भैया के इम्तहान तो ख़त्म हो गए हैं । अब करना ही क्या है ? ३७२

प्रभा: ऊपर क्यों बुलाया बिना बात को ? ३७४

oo समर छत पर आ जाता है । ३७५

मुन्नी: भैया, हमें इस इतवार को सिनेमा ले चलो । ३७६

समर: अभी तो देर है इतवार में । ३७७

मुन्नी: इस बार मैं भी जाऊंगी । हम, तुम और छोटी भाभी -- ३७८
बस तीन जने ।

समर: क्यों? प्रभा कह रही थी? ३७९

मुन्नी: हां, कह रही थी । उसे पिछली बार भी तो नहीं ३८०
ले गए ।

समर: क्या? ३८१

मुन्नी: ले चलोगे कि नहीं, बताओ । बताओ न भइया, ३८२
ले चलोगे, बताओ न । बताओ ।

oo oo oo oo

oo पिताजी का कमरा । मुन्नी का पति जलेबी खा रहा है । ३८३
बड़े भैया पास बैठे हैं । पिताजी कदम दो कदम चलते हैं ।
फिर रुककर मुन्नी के पति से बात करते हैं:

पिताजी: लेकिन थे कहां इतने दिन? कितनी चिट्ठियां लिखीं । ३८४
एक का भी जवाब नहीं दिया ।

बड़े भैया: मैं गया भी था एक बार, लेकिन सुना तुम घर छोड़कर दूसरे ३८५
शहर चले गए थे ।

मुन्नी का पति: अब क्या बताऊं? नौकरी के चक्कर में मारा मारा ३८६
फिर रहा था । कल ही फिर जाना है ।

पिताजी: कल? ३८७

oo oo oo oo

oo मुन्नी के पति के अलावा परिवार के सब लोग एक साथ ३८८
बैठे हैं ।

अम्मा: oo पिताजी से oo कुछ बताओगे भी कि चले आये, ३८९
कल मुन्नी जाएगी । ऐसी क्या आफ़त आ पड़ी है
निपूते पर । दो साल से कौन - सी मक्खी छींक गई थी?

पिताजी: भई, वह मुन्नी को लेने आया है । आख़िर है तो इसका ३९०
पति ही । बहुत माफ़ी - वाफ़ी मांग रहा है । कह
रहा था जो बिरादरी का दंड होगा, भरेगा ।

अम्मा: उस चुड़ैल का क्या हुआ? ३९१

पिताजी: उसी चुड़ैल की वजह से ही तो अकल आई है । पांच, छः ३९२
महीने हुए सब कपड़े जेवर समेटकर भाग गई । पता नहीं उसके
बहकावे में आकर अकल कहां चरने चली गयी थी ।

अम्मा: गई थी तेरी अम्मा के पीहर । ३९३

अमर: अब अपनी पड़ी है तो आये हैं लाट साहब । बाबूजी, तुम भी मत भेजना मुन्नी जीजी को । ३९४

अम्मा: ऐसे आदमी का क्या ठिकाना ? कल किसी और के बहकावे में आ जाएगा । मैं नहीं भेजती अपनी लड़की को । पहले ही अधमरी करके भेजा है । ३९५

पिताजी: भई, वह क़सम खा रहा है । बातों से भी लगता है कि अब समझ आ गई है । कोई ज़िन्दगी भर थोड़े ही ग़लतियां करता रहता है । ३९६

अम्मा: तुम्हारी बातों का क्या ? जिसने जैसा समझाया वैसे ही मान गए । ३९७

पिताजी: बस यही बात तुम्हारी मुझे बुरी लगती है । समझती तो खाक नहीं हो और बस अपनी अपनी गाये जाती हो । कभी दूसरों की भी तो सुना करो । आख़िर आया तो वह खुद ही है । और बातों से भी पता चलता है कि काफ़ी पछतावा है । और अब तंग वंग नहीं करेगा । मुन्नी को क्या ज़िन्दगी भर यहीं बिठा रखना है ? अपने वहां रहेगी, घर गृहस्थी संभालेगी ! हम लोग भी आख़िर कब तक रहेंगे ? ३९८

00 मुन्नी रो रही है । ३९९

समर: क्या बात है मुन्नी ? क्या बात है ? बता न... मुन्नी! ४००

बड़े भैया: मुन्नी, कुछ बात भी बता मुझको, क्या हो गया है ? ४०१

मुन्नी: 00 रोते रोते कहती है: 00 बाबूजी, मुझे मार डालो, मेरा गला घोंट दो । मगर वहां मत भेजो बाबूजी । मैं वहां मर जाऊंगी । बाबूजी, मुझे मत भेजो । मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, बाबूजी । पांव पड़ती हूं, बाबूजी । मत भेजो । ४०२

पिताजी: क्या कर रही है, बेटी ? चुप हो जा । तू भी रह । तेरी भलाई हो, वही करेंगे । चुप हो जा । ४०३

पिताजी: चुप हो जा, बेटी ।चुप हो जा, चुप हो जा, बेटी । ४०४

अम्मा की आवाज़: मुन्नी ४०५

00 अगले दिन । मुन्नी जा रही है । आई आवाज़ में समर से बोलती है: ४०६

मुन्नी: भैया, भाभी से बोलना, उन्होंने कुछ भी नहीं किया । ४०७

00 प्रभा खिड़की से मुन्नी को तांगे पर जाते देखती है । उसे मुन्नी की बात याद आती है । ४०८

00 फ़्लैश - बैक । ४०९

मुन्नी की आवाज़: भैया राज़ी हो गए हैं, भाभी । हम इस इतवार को सिनेमा जाएंगे । तुम, भैया और मैं । बस तीन जने । ४१०

00 सीन समाप्त । दिवाकर की बैठक में । ४११

दिवाकर: चलो, जान छूटी, बस पास हो जाऊं, फिर पढ़ाई- ४१२
लिखाई को गुडबाय ।

समर: कम से कम एम० ए० तो कर ले । ४१३

दिवाकर: फिर पढ़ाई की बात ? अब मैं डट के सनीमा देखूंगा । ४१४
बहुत दिन हो गये यार, एक सिनेमा नहीं देखा । यह भी
कोई ज़िन्दगी है ? 00 अपनी बीवी से 00 किरनजी
कुछ चाय- वाय ले आओ ।

00 समर से 00 किरन को भी साथ ले चलेंगे हम । ४१५
बिचारी ने इतने दिन से एक सिनेमा भी नहीं देखा है ।
क्या सोचती होगी ये ? तुम्हारी अम्मा भी यार ...

00 समर दिवाकर की मेज़ से किताब उठाकर खोलता है । ४१६

दिवाकर: अरे फिर किताब को हाथ लगाया ? रख ! ४१७
ठीक टाइम पर पहुंच जाना यहां पर । सनीमा के बाद
खाना तू यहीं खाएगा, ठीक है ? अब बस, किरनजी
का इलाज । बीच में नाराज़ हो गई थी कि पढ़ाई तुम्हारे
लिए सब कुछ है और मैं कुछ नहीं । इसलिए अब हम चौबीसों
घंटे इन की खिदमत में रहते हैं ।

किरन: क्या उल्टल - शुल्टल बका करते हो हमेशा ? ४१८

दिवाकर: चाय पी यार । ४१९

दिवाकर: 00 समर से 00 अरे हां, ये कई बार मुझसे पूछ चुकी ४२०
हैं, तुम अपनी वाईफ़ को हमारे यहां क्यों नहीं लाते ?
00 किरन से 00 किरनजी, ऐसा करो । इनकी दावत
रखो, तब लाएंगे भाभीजी को ।

किरन: अच्छा बताइये, कब ला रहे हैं भाभीजी को आप ? ४२१

समर: वो... वो तो अपने घर में है । इस बार आएगी तो ४२२
ज़रूर लेकर आऊंगा । 00 चाय जल्दी से निगल जाता
है 00 अच्छा मैं चलूं ।

किरन: बैठिये न । ४२३

00 00 00 00

00 प्रभा अपने कमरे में खिड़की के पास खड़ी है । चूड़ीवाले की ४२४
आवाज़ ऊपर पहुंचती है ।

चूड़ीवाले की आवाज़: चूड़ियां, प्लेन चूड़ियां । फ़ैन्सी चूड़ियां । चूड़ी ४२५
बिल्लोरियां । कांगनी चूड़ियां । प्लेन चूड़ियां ।
बिल्लौरी चूड़ियां ।

00 चूड़ीवाला नीचे की गली पार करके आगे चला जाता है । ४२६
प्रभा गली की ओर ताकती रहती है । फिर कमरे में
बिस्तर ठीक करने लगती है ।

00 00 00 00

00 दिवाकर, किरन और समर सिनेमाघर में । फ़िल्म ४२७
के हीरो और हिरोइन नाव में बैठे गाना गा रहे हैं ।

हिरोइन: मदभरी फ़िदाओं में, आ गए हैं हम कहां? ४२८

हीरो: भूल जाये सारे ग़म, तैरती हवाओं में हम, प्यार का ४२९
है यह जहां ।

दोनों: झूमती घटाओं में ... 00 म्युज़िक 00 ४३०

हिरोइन: हे सजन, यह प्यार की डगर, ४३१
बावरी अजान में, मगर --
खो न जाओ इन दिशाओं में,
थामना कि मैं हूं बेख़बर ।
ले चलो मुझे सजन, चलो जहां जहां ।

दोनों: झूमती घटाओं में ... ४३२

हीरो: परबतों में बादलों की छांव, ४३३

हिरोइन: प्यार से लिपटने चली । ४३४

हीरो: वो किरण पहेली शाम की? ४३५

हिरोइन: बांह में सिमटने चली । ४३६

हीरो: हम तेरे ... ४३७

दोनों: झूमती घटाओं में, मदभरी फ़िदाओं में, ४३८
आ गये हैं हम कहां?

00 समर सिनेमा से लौटकर सीढ़ियों से ऊपर आ रहा है । ४३९
प्रभा नीचे जा रही है । दोनों चुप । समर अपने कमरे में
आकर पानी पीता है और ट्रान्ज़िस्टर चलाता है ।

रेडियो: दो सौ पैंतालीस नौ मीटर पर यह विविधभारती का ४४०
विज्ञापन कार्यक्रम है ...

00 00 00 00

00 सवेरे । दिवाकर की बैठक । समर अन्दर आता है । ४४१
कमरे में और कोई नहीं है ।

समर: दिवाकर । ४४२

दिवाकर: ओ हो ... रात के ग्यारह बजे गया था यार, सुबह ४४३

सुबह आ धमका । तेरी बीवी मायके है । क्यों बीवीवालों के आराम से जलता है ?

समर: चला जाऊं ? ४४४

दिवाकर: अच्छा, बैठ जा । ४४५

समर: बाहर निकल कर तो देख, कितना दिन चढ़ा है । ४४६

दिवाकर: अबे दिन को चढ़ने दे, उसका काम ही यही है । इम्तहान में इतने पिसे हैं, थोड़ा आराम भी न करें ? बीवीवाले हैं, तेरे जैसे नहीं । तू तो आराम का दुश्मन है । अभी से थर्ड इयर की किताब घोटनी शुरू कर दी होगी तूने । ४४७

समर: नहीं दिवाकर, मैं आगे नहीं पढ़ूंगा । कोई अच्छी - सी नौकरी मिल जाये तो कर लूंगा । ४४८

दिवाकर: oo किरन से oo ओ हो ... सुना किरनजी, हमारे समर साहब फ़िल्मी डायलाग बोल रहे हैं । ज़रा यहां तो आना । अरे मियां, चोटी फटकारो और मस्त रहो । नौकरी करने तो ज़िन्दगी पड़ी हुई है । ४४९

oo किरन बैठक में आती है । दिवाकर सिगरेट सुलगाने को तैयार है । किरन दिवाकर के होठों से सिगरेट खींच लेती है । ४५०

दिवाकर: यह मेरी पहली सिगरेट है । ४५१

किरन: बड़े आये पहली वाले । कह दूंगी अम्मा से जाकर । यह समर भाई साहब भी तो हैं । पीते हैं कभी ? ४५२

दिवाकर: यह समर भाई से पूछिए, कुछ कह रहे हैं । ४५३

समर: कुछ नहीं । कह रहा था कल की पिक्चर कैसी लगी आपको ? ४५४

दिवाकर: पिक्चर तो घर आ के हुई । अम्माजी मुंह फुलाये बैठी हुई थीं । ४५५

किरन: अब कोई दिन रात कहां तक पिसे ? दो महीने में एक पिक्चर देखने गये । इस पर वह अगर नाराज़ हों तो कोई क्या करे ? ४५६

दिवाकर: चलो, आज फिर पिक्चर देखने चलें । ४५७

किरन: पिक्चर देखने ? काफ़ी दिनों से गुंजाइश लगी हुई है । वहां चलेंगे । ४५८

दिवाकर: यह लो । ४५९

किरन: चलो न । ४६०

दिवाकर: और अम्माजी ? ४६१

किरन: उन्हें तुम मना लेना । oo समर से oo आप भी ४६२

चलिये न ?

दिवाकर: अब मैं सिगरेट पी लूं ? ४६३

oo oo oo oo

oo प्रभा छत पर दाल चुन रही है । अम्मा उसे डांटती है । ४६४
पीछे से समर आता है और अपने कमरे की ओर चला जाता है ।

अम्मा: और कोई जगह नहीं मिली तुम्हें दाल बीनने की ? ४६५
वहां सिल्ली पर बैठकर ही दाल बिनेगी ? गूंगी की तरह मनहूस - सी घूमती फिरे ॥ कौन बैठा है तेरा वहां ? हमें भी तो बता । कौन है तेरा वहां ?

oo अम्मा प्रभा छत पर ही हैं । भाभी बच्ची लिये आती है । ४६६
बच्ची अम्मा को देती है ।

भाभी: लो अम्मा । तुम क्यों अपना खून जलाओ ? ४६७

अम्मा: खून न जलाऊं तो क्या करूं ? इन्हीं लक्षनों के मारे ४६८
खसम देखता तक नहीं । गरम दूध मरा निगलने का, न उगलने का ।

oo अम्मा चली जाती हैं । भाभी प्रभा के पास आती है । ४६९

आवाज़ में नकली सहानुभूति है ।

अम्मा: oo प्रभा से oo तू भी मरी क्यों बैठा करे वहां ? ४७०
कब तक गालियां खाती रहेगी ?

oo oo oo oo

oo समर रेलवे स्टेशन के पुल से जाती गाड़ी को देख रहा है । ४७१
वह घर आता है और अपने बिस्तर पर लेट जाता है ।

समर चारपाई पर करवटें बदल रहा है । नींद नहीं आती । ४७२
उठकर छत पर आता है ॥ प्रभा एक कोने में सिसकियां भर रही है । समर अपने लिए सुराही से पानी ढालता है । पानी पीता है, प्रभा की ओर देखता है, नीचे चला जाता है ॥ समर फिर से चारपाई पर करवटें बदल रहा है । उसे मुन्नी की सिफ़ारिश याद आती है :
" भैया, भाभी से बोलना ॥ उन्होंने कुछ भी नहीं किया, भैया ।"

सिनेमावाले आनन्दित हीरो - हिरोइन की तस्वीर समर की आंखों के सामने घूम जाती है । कितना मीठा था उन दोनों का मेल ॥

आवाज़: आ गये हैं हम कहां ? ४७३

आवाज़: भैया, भाभी से बोलना । भैया, भाभी से बोलना । ४७४

उन्होंने कुछ भी नहीं किया ।

00 समर चारपाई से उठकर छत पर जाता है । प्रभा अब भी ४७५
रो रही है । कहीं, दूर से किसी भजन की कड़ियां
सुनाई देती हैं ।

समर: यह आधी रात यहां क्या कर रही हो? ४७६

00 प्रभा सिर उठाकर समर को देखती है । उसके भाव को ४७७
आंकना चाहती है ।

समर: अब रात बहुत हो गई है, सुबह रो लेना । ४७८

प्रभा: आपको क्या है ? आप जाकर सोइये न । छ: महीने ४७९
हो गये, कभी आपको चिन्ता हुई मेरी? अब ऐसी क्या
ज़रूरत आ पड़ी? आप जाकर सो जाइये ।

00 समर बहुत देर तक वहीं खड़े रहता है । सोच नहीं पाता, ४८०
क्या करे ? एकाएक प्रभा के पास बैठ जाता है । उसके
कंधे पर हाथ रखकर पूछता है:

समर: प्रभा, तुम मुझसे नाराज़ हो ? ४८१

00 प्रभा समर की ओर देखती है । ४८२

समर: प्रभा । ४८३

प्रभा: मुझे बताओ, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? क्या ४८४
क़सूर किया है मैंने ? मैं तुम्हें पसन्द नहीं हूं, तो
गला घोंट दो मेरा, मैं हूं तक नहीं करूंगी । लेकिन
मुझे बताओ तो सही, बताओ, बताओ, बताओ ।

00 प्रभा समर के कंधे पर सिर रखकर रोने लगती है । ४८५

समर: प्रभा, एक बात पूछूं ? तुम यहां बैठके रो क्यों रही हो? ४८६
प्रभा, बोलो न ।

प्रभा: छोड़ो भी । उन बातों को दोहराने से अब क्या फ़ायदा ? ४८७

समर: बताओ न, प्रभा, इतनी देर से पूछ रहा हूं । ४८८

प्रभा: इतना जलाकर थोड़ा - सा पूछ भी लिया तो क्या हुआ ? ४८९
इतने दिन सब कुछ चुप चाप सहा । दहेज़ नहीं लाई ,
कपड़े-लत्ते नहीं लाई । यह हूं, वह हूं । लेकिन चरित्र पर
किसी ने उंगली नहीं उठाई, लेकिन आज अम्माजी ने ...
एक बार तो मन में आया शादी की रात वाली उस बहू
की तरह जल मरूं ।

समर: प्रभा ! ४९०

प्रभा: अब मैं भी पूछूं ? ४९१

समर: कुछ मत बोलो प्रभा , कुछ मत बोलो । मैं सब जानता हूं । ४९२

प्रभा: बताओ, मैंने क्या किया है ? ४९३

समर: किसी ने कुछ नहीं किया प्रभा, मैंने, तुमने, किसी ने कुछ नहीं किया । पता नहीं किसकी ग़लती थी । शायद मेरी ही हो । लेकिन जो कुछ हो गया, प्रभा सब भूल जाओ । सब भूल जाओ प्रभा ... प्रभा ... प्रभा ... ४९४

oo दोनों गले लगाये वहीं छत पर सो जाते हैं । सूरज निकलता है । दोनों वहीं छत पर हैं । प्रभा उठती है और नीचे जाने लगती है । रुककर अपने पति को कहती है: ४९५

प्रभा: हमें एक पोस्टकार्ड ला दीजिए । बहुत दिनों से घर चिट्ठी नहीं लिखी । ४९५

oo चिड़ियों का कलरव । भाभी की बच्ची होने का संगीत । सूरज का नया गोला छतों की ऊँचाई तक पहुंच गया । सूरज से भी ऊँचा दूर तक फैला हुआ विशाल आकाश नज़र आता है । ४९६

oo oo oo oo

oo फ़िल्म समाप्त oo